सामर्थी बनाना
अधिवेशन 3

एक वैकल्पिक जीवन शैली

एक वैकल्पिक जीवन शैली

इस अधिवेश्न में इस बात की खोज करेंगे कि पहली सदी के विश्वासी कैसे इक्टठे रहते थे। हम यह देखेंगे कि कैसे एक नई जीवन शैली अंकुरित हो जाती है...एक वैकल्पिक जीवन शैली।

इस जीनव शैली की कूंजी **हम गवाह हैं** में है।

यीशु ने कहा, ''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूश्लेम और सारे यहूदिया और सामरिया, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।'' — प्रेरित 1:8

यह पद चेलों के कदमों को आगे बढ़ने का एक ओदश था

1. उन्होंने रात और दिन गवाही दी, जहां कहीं गए हलचल पैदा कर दी, क्योंकि वे पवित्रआत्मा के साथ सामर्थी बनाए गए थे।

2. यरूशलेम में उन्हें बड़ा अच्छा परिणाम मिला, (5000 बचाए गए, 3000 बचाए गए), वे प्रेरितों से बहुत कुछ सीख रहे थे, वे छोड़ना नहीं चाहते थे। यीशु हमारे हृदयों में संसार के प्रति एक जागृत विवेक को डालना चाहता है।

3. परन्तु प्रभु उन्हे दूसरे स्थानों पर भी चाहता था। इसलिए वह उनके ऊपर सताव को ले आया और वे बिखर गए। जहां कहीं वे गए, उन्होंने नई आग लगा दी।

4. इसलिए उन्होंने यरूश्लेम से आरम्भ किया, पर वे शहर के आस—पड़ोस में भी गए। हमारे लिए यह अपने शहर से दूर जाने की बात होगी।

5. यह हमारे परिवार और रिश्तेदारों से आरम्भ होती है, और यह हमारे पड़ोसियों और सहकर्मियों में फैल जाती है, और फिर पड़ोस के शहरों में और यहां तक कि हमारे राज्य और हमारे देश, और फिर पृथ्वी के छोर तक फैल जाती है।

आईए हम सावधानी से इस विवरण को देखे कि कैसे कलीसिया नए नियम में गवाही देने की जीवन शैली को जी रही थी।

इस जीवन शैली के चार आधारभूत तत्व को हम खोज करेंगे जो हमें प्रेरित 2:42—47 में हमें देखने को मिलते हैं :

- धोषणा
- प्रदर्शन
- भण्डारीपन
- बनावट

एक वैकल्पिक जीवन शैली

कुंजी = हम गवाह हैं

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओंगे और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे गवाह होगे'' – प्रेरित 1:8

ये जीवन शैली की यही विशेष योग्यता होगी जिसे यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी।

यरूशलेम में

यहूदिया में

सामरिया में

और पृथ्वी के छोर तब

नये नियम की जीवन शैली के चार आधारभूत तत्व

प्रेरित 2:42–47

(42) *और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करनें में लवलीन रहे।*
(43) *और सब लोगों पर भय छा गया और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।*
(44) *और वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे और उनकी सब वस्तुंए सांझे की थी।*
(45) *और वे अपनी–2 सम्पत्ति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।*
(46) *और वे प्रतिदिन एक मन होकर मंदिर में इक्ट्ठें होते थे और घर–2 रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन करते थे।*
(47) *और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे परमेश्वर उनको प्रतिदिन उनमें मिला दिया करता था।*

1. **घोषणा : उन्होंने बड़ी लगन से निर्भिकतापूर्ण गवाही दी।**

उनकी जुबानें खंल गई!

''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगे उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करूंगा'' – मत्ती 10:32–33

1. पहला तत्व धोषणा करना है। **<u>उन्होंने बड़ी लगन से निर्भिकतापूर्ण गवाही दी।</u>**

1. उनकी जीभें खुल गई थी कि वे निर्भिकतापूर्ण गवाही दे सकें

2. पवित्रआत्मा जैसे ही हम पर आ जाता है हमारे मुंह खुल जाते हैं।

3. यदि हम दूसरी बाते कर सकते हैं (जैसे मौसम, हमारे पोते–पोतीयां के बारे में, हमारे काम, हमारे शहर या गांव में घट रही घटनाओं के बारे में) तब हम यीशु बारे में भी बात कर सकते हैं कि उसने हमारे लिए क्या किया, और हमारे जीवनों में क्या कर रहा है।

एक वैकल्पिक जीवन शैली

कुंजी = हम गवाह हैं

''परन्तु जब पवित्रआत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओंगे और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरिया में यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे गवाह होगे'' – प्रेरित 1:8

ये जीवन शैली की यही विशेष योग्यता होगी जिसे यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी।

यरूशलेम में

यहूदिया में

सामरिया में

और पृथ्वी के छोर तब

नये नियम की जीवन शैली के चार आधारभूत तत्व

प्रेरित 2:42–47

(42) *और वे प्रेरितों से लगातार शिक्षा पाने, संगति रखने, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करनें में लवलीन रहे।*
(43) *और सब लोगों पर भय छा गया और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।*
(44) *और वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे और उनकी सब वस्तुंए सांझे की थी।*
(45) *और वे अपनी–2 सम्पत्ति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।*
(46) *और वे प्रतिदिन एक मन होकर मंदिर में इक्ट्ठें होते थे और घर–2 रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन करते थे।*
(47) *और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे परमेश्वर उनको प्रतिदिन उनमें मिला दिया करता था।*

1. घोषणा : उन्होंने बड़ी लगन से निर्भिकतापूर्ण गवाही दी।

उनकी जुबानें खंल गई!

''जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगे उससे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करूंगा'' – मत्ती 10:32–33

4. प्रेरित अध्याय 1—5 में हम ये देखते हैं कि उन्होंने गवाही देने में कैसे तरक्की की :

- पिन्तेंकुस्त के दिन वे पवित्रआत्मा से भर गए थे और उनका डर गायब हो गया था

- कुछ दिन के बाद, पतरस और यहून्ना मंदिर में गए और परमेश्वर ने उन्हें एक अंधें भिखारी को चंगा करने में इस्तेमाल किया। एक भीड़ इक्टठी हो गई उन्हें हिरासत में ले लिया गया और तब छोड़ दिया गया। प्रेरित 4 मे उन्होंने तुरन्त प्रार्थना की, सुरक्षा के लिए नहीं परन्तु और अधिक साहस, और अधिक सामर्थ के लिए।

- प्रेरित 5 में उन्हे फिर हिरासत में लिया गया था। एक स्वर्गदूत ने उन्हें जेल से छुड़ा लिया। बन्दीगृह का अधिकारी उन्हे न पा सका। वे फिर से मंदिर में जाकर यीशु की गवाही दे रहे थे। परणिाम क्या था...अपने पर तरस नहीं; पर यीशु के लिए सताव सहने में आनन्दित थे। वे गवाही देते रहे। कोई उन्हें नहीं रोक सका।

5. यरूश्लेम से गवाही दूर तक फैल गई। उस समय के संसार की उस पीढ़ी ने यीशु के बारे मे सुनना शुरू कर दिया था। इन विश्वासीयों के कारण एक ही सदी में संसार के अस्तित्व में हलचल मच गई। एक आग उनमें प्रज्जवलित हो गई थी वे यीशु के बारे में संसार को बताने से नहीं रूक सके।

6. पवित्रआत्मा उसी आग को हमारे बीच में भी डालना चाहता है, और उसी साहस को हममें भर देना चाहता है, हमें अपने लोगों को उत्साहित करना चाहिए कि वे कम से कम एक व्यक्ति को गवाही दें और प्रार्थना करें कि उन्हें यह अवसर इसी सप्ताह मिले। पवित्रआत्मा चाहता वह हमें यीशु की गवाही देने के लिए साहस प्रदान करे।

सर्वेक्षण प्रेरित 1:5

2:42—47

4:29—35

4:40—42

जब यह समूह यरूश्लेम में छोड़ा गया तो फिर हालात वैसे ही नही रहें। एक पीढ़ी का संसार यीशु के बारे में सुनने लगा और एक सदी में ये जो विश्वासी कहलाते थे ने संसार को पूरी रीति से हिला गया।

2. प्रदर्शन करना ..... **उन्होंने एक आशाजनक विश्वास प्रगट किया**

मरकुस 16:15—20

और उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

और विश्वास करने वालों के ये चिन्ह होगें कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई—नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगें और वे चंगे हो जाएगें?

निदान, प्रभु यीशु उनसे बाते करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया, और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ—साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन!

प्रेरित 2:43

... और सब लोगों पर भय छा गया और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।

प्रेरितों 4:30

''और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जांए''।

2. जीवन शैली का दूसरा तत्व प्रदर्शन है। **<u>उन्होंने एक आशाजनक विश्वास प्रगट किया</u> ।**

मरकुस 16:15—20(पढ़ें)

> और उसने उनसे कहा, *''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा''*।
>
> *''और विश्वास करने वालों के ये चिन्ह होगें कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओ ंको निकालेंगे, नई—नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगें और वे चंगे हो जाएगें''*

''सापों को उठा लेंगे'' का यीशु का दिया गया उदाहरण प्रेरितों के काम 28 में पौलुस के अनुभव में पाया जाता है।

कई बार जो नफरत और विरोध करते हैं और यहां तक कि आपको जहर देने की कोंशिश करते हैं।

> निदान, प्रभु यीशु उनसे बाते करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया ग्या और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया, और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ—साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन!

यीशु ने अपने चेलों से इन चिन्हों की बात की, उनके लिए जो उस पर विश्वास करेंगे और उसका अनुसरण करेंगे, वे परमेश्वर की सामर्थ का प्रदर्शन करेंगे। यीशु ने कहा कि यदि वे विश्वास करेंगें तो ये सब चिन्ह उनके साथ भी होगें।

चेलों के द्वारा बहुत से अद्‌भुत काम किए गए।

- प्रेरित 4 में उन्होंने प्रार्थना की कि परमेश्वर अपने हाथ को चंगाई के लिए बढ़ाए और बहुत से चिन्ह और आश्चर्यकर्म यीशु के नाम में किए गए।

सर्वेक्षण प्रेरित 1:5

2:42—47

4:29—35

4:40—42

जब यह समूह यरूशलेम में छोड़ा गया तो फिर हालात वैसे ही नही रहें। एक पीढ़ी का संसार यीशु के बारे में सुनने लगा और एक सदी में ये जो विश्वासी कहलाते थे ने संसार को पूरी रीति से हिला गया।

2. प्रदर्शन करना ..... **उन्होंने एक आशाजनक विश्वास प्रगट किया** .....

मरकुस 16:15—20

और उसने उनसे कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो, जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

और विश्वास करने वालों के ये चिन्ह होगें कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई–नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगें और वे चंगे हो जाएगें?

निदान, प्रभु यीशु उनसे बाते करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया ग्या और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठ गया, और उन्होंने निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे वचन को दृढ़ करता रहा। आमीन!

प्रेरित 2:43

... और सब लोगों पर भय छा गया और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।

प्रेरितों 4:30

''और चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जांए''।

- उन्होंने विश्वास किया कि आलौकिक परमेश्वर उनके मध्य मे है और वह आलौकिक कामों को करेगा। यदि हम आशा छोड़ दें तो हमारे पास लोगों को देने के लिए क्या है?

- बाइबल से सुनना, और उन बातों पर विश्वास करना एक बहुत बड़ी बात है। परन्तु यदि एक बच्चा बीमार है या एक व्यक्ति शराब का आदी है, या एक व्यक्ति दुष्टाआत्मा से दुखी है, या शारिरीक अभिलाषा जिसे वे छोड़ नहीं पा रहा है, या अपने व्यक्तित्व में बिखरा हुआ है... यदि जो कुछ हमने बोला है वह पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा उसकी जरूरत को पूरा नहीं करता तो क्या लाभ है?

- तन्जानिया नामक देश में मुस्लिम प्रचारक, ईरान के मुस्लमानों से आर्थिक मदद पाकर एक–2 घर में जाते हैं, और खुले में प्रचार करते और नाटक दिखाते है। वे नए विश्वासीयों को भोजन और आर्थिक मदद देते हैं, और मध्यपुर्वी देशों के मुस्लीम धन से जबरदस्ती मस्जीदों का निर्माण करते है। गरीब मसीही सुसमाचार प्रचारक उनके इस कार्य का उस सच्चाई से सामना करते हैं जो मनुष्य को आज़ाद कर देती है। कैसे वह इन खरीदे गए मुस्लीमों की श्रेणी के विरोध में प्रतिर्स्पधा कर सकते हैं? बस केवल एक सच्चे सुसमाचार के द्वारा? नहीं। सुसमाचार के साथ में आलौकिक सामर्थ का होना जरूरी हैं, जो लोगों के जीवनों को बदल देता है, यदि वे उस सामर्थ का प्रदर्शन करें, जो शरीरों को चंगा करती, तब जीवन के संदेश को सुना जाएगा।

- कई सदीयों से बहुत सी कलीसियाओं ने इस आलौकिक सामर्थ की आशा को खो दिया हैं। परमेश्वर की स्तुति हो कि हम ऐसे दिनों में जी रहें हैं, जब परमेश्वर एक बार फिर इस संसार में अपनी आलौकिक सामर्थ की बड़ी और शक्तिशाली धारा के साथ चलाऐमान हो रहा है।

- हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं कि परमेश्वर ने चिन्हों, आश्चर्य और आश्चर्यकर्म के द्वारा अविश्वासी लोगों के ध्यान को अपनी ओर खींचा और उन्हें मसीह तक ले आया

प्रेरित 2:1–12	अन्य भाषा	3000 बचाए गए
प्रेरित 3:1–11	चंगाई	5000 बचाए गए
प्रेरित 5:12–16	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 8:6–13	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 9:32, 35,42	मृतक जी उठे	पूरे शहर ने विश्वास किया
प्रेरित 13:4–12	आश्चर्यकर्म	राज्यपाल नें विश्वास किया
प्रेरित 14:3	महान आश्चर्यकर्म	प्रभु का संदेश साबित किया गया

उन्होंने विश्वास किया कि आलौकिक परमेश्वर उनके मध्य मे है और वह आलौकिक कामों को करेगा! यदि हम कभी इस आशा को खों दे तो हम केवल दुनिया को चावल के भूसा जितनी ही प्रभावशाली आशा दे सकते हैं

– आश्चर्यकर्म और अद्‌भुत कार्य

– परमेश्वर का भय (पवित्र भय)

हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं कि परमेश्वर ने चिन्हों, आश्चर्य और आश्चर्यकर्म के द्वारा अविश्वासी लोगों के ध्यान को अपनी ओर खींचा और उन्हें मसीह तक ले आया।

प्रेरित 2:1—12	अन्य भाषा	3000 बचाए गए
प्रेरित 3:1—11	चंगाई	5000 बचाए गए
प्रेरित 5:12—16	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 8:6—13	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 9:32, 35,42	मृतक जी उठे	पूरे शहर ने विश्वास किया
प्रेरित 13:4—12	आश्चर्यकर्म	राज्यपाल नें विश्वास किया
प्रेरित 14:3	महान आश्चर्यकर्म	प्रभु का संदेश साबित किया गया

और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्रआत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा – इब्रनियों 2:4

''आशा किया हुआ विश्वास'' पैदा करता है – ''अविश्वास'' मना करता है

''क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे किसी और बात के विषय में कहने का हियाव नहीं जो मसीह ने अन्यजातियों की अधिनता के लिए वचन और कर्म ओर चिन्हों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से और पवित्रआत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किये, यहां तक कि मैंने यरूशलेम से लकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार को पूरा पूरा प्रचार किया''– रोमियों 15:18—19

और इस तरह, एक फैलने वाली गवाही प्रराम्भिक कलिसीया में बड़े साहस की धोषणा और शक्तिशाली प्रदर्शन के द्वारा आगे बढ़ी। परमेश्वर की उपस्थिति अन्यजाति संसार में प्रगट की गई।

- पहली कलीसिया के सुसमाचारक हमारी ही तरह के लोग थे। वे प्रभु की इस प्रतिज्ञा को स्वीकार करके निकल पड़े कि, ''मैं तुम्हें पवित्रआत्मा के साथ बपतिस्मा दूंगा ताकि तुम मेरे गवाह बन सको''।
- लीपिक, कुड़ा इक्टठा करने वाले, तम्बु बनाने वाले, मछुआरे, ईंट बनाने वाले, बढ़ई, कोई भी क्यों न हो, उन्होंने सभी को गवाही दी, और जब उन्होंने ऐसा किया, तो देखिए क्या हो गया — जीवन बदल गए, बीमार चंगे हो गए, लोगों की जरूरतें पूरी हो गई, गुस्से वाले स्वभाव शान्त हो गए, गन्दे शब्द बोलने वाले मुह शुद्ध हो गए, दुष्टआत्मांए निकाली गई, चिन्तांए और हताशांए खामोश हो गई, प्रार्थनाओं का उत्तर मिला, और परमेश्वर की अदभुत सामर्थ का प्रदर्शन हुआ।
- अविश्वास रोक देता है परन्तु आशा परमेश्वर की सामर्थ को ले आती है।
- हमने यह सीखते हैं कि यहां तक उसके अपने शहर में यीशु कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर सका क्योंकि वहां के लोगों ने अविश्वास किया। बहुत सारी कलीसियाऐं अब यह आशा नहीं करती कि परमेश्वर आश्चर्यकर्म कर सकता है, और इसलिए वह उनके लिए आश्चर्यकम नहीं कर सकता।
- हमें अपने लोगों को उत्साहित करना हैं कि, वे इस बात की आशा करें कि, वे जब गवाही देते हैं तब परमेश्वर चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के साथ उत्तर दे।
- इब्रनियों 2:4 ये कहता है कि परमेश्वर ने हमेशा अपने संदेश के सत्यापन के लिए चिन्हो और आश्चर्यकर्मों को प्रगट किया और उसने ''हममें से हरेक'' को ये वरदान दिए है ।
- मानवीय जरूरतो के बीच में जब इन चिन्हो को प्रगट किया जाता है, तब लोग उठ बैठते हैं, और ध्यान देते है। लोग वास्तविकता को ढुंढ रहे हैं। उन्हें यह देखने की जरूरत है कि परमेश्वर जीवित है, और आज भी अपने लोगों में चलायमान है।
- रोमियों 15:18—19 में पौलुस ने इस बात की गवाही कि उसने पुरे सुसमाचार को प्रचार किया है...वचन के साथ (संदेश जो उसने दिया था) और कार्यों के साथ (उन लोंगों के सामने जिस तरह का जीवन जीया था) और बहुत से चिन्हों और आश्चर्यकर्मों के साथ — ये सब कुछ उसने पवित्रआत्मा की सामर्थ के द्वारा किया।

  इसलिए ''पूरे सुसमाचार प्रचार'' के तीन तत्व होते हैं
  - हमें सच की घोषणा करने की जरूरत है
  - हमें सच में जीवन व्यतीत करने की जरूरत है
  - और हमें सच के साथ चिन्ह और आश्चर्यकर्मों को होने देने की जरूरत है

और इस तरह एक फैलने वाली गवाही प्रराम्भिक कलिसीया में बड़े साहस की धोषणा और शक्तिशाली प्रदर्शन के द्वारा आगे बढ़ी। परमेश्वर की उपस्थिति अन्यजाति संसार में प्रगट की गई जो उसे नहीं जानता था।

यह उत्साह देने वाली बात है कि, इन दिनों और युग में प्रभु पहली कलीसिया के समान एक बार फिर सब कुछ को उत्तेज़ित कर रहा और ताज़गी से भर रहा है। हम भी इस संसार में वही संदेश — मसीह का पूरा सुसमाचार उसी सामर्थ में अपने चारों ओर ला सकते हैं।

उन्होंने विश्वास किया कि आलौकिक परमेश्वर उनके मध्य मे है और वह आलौकिक कामों को करेगा! यदि हम कभी इस आशा को खों दे तो हम केवल दुनिया को चावल के भूसा जितनी ही प्रभावशाली आशा दे सकते हैं

– आश्चर्यकर्म और अद्‌भुत कार्य

– परमेश्वर का भय (पवित्र भय)

हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखते हैं कि परमेश्वर ने चिन्हों, आश्चर्य और आश्चर्यकर्म के द्वारा अविश्वासी लोगों के ध्यान को अपनी ओर खींचा और उन्हें मसीह तक ले आया।

प्रेरित 2:1–12	अन्य भाषा	3000 बचाए गए
प्रेरित 3:1–11	चंगाई	5000 बचाए गए
प्रेरित 5:12–16	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 8:6–13	आश्चर्यकर्म	बहुतों नें विश्वास किया
प्रेरित 9:32, 35,42	मृतक जी उठे	पूरे शहर ने विश्वास किया
प्रेरित 13:4–12	आश्चर्यकर्म	राज्यपाल नें विश्वास किया
प्रेरित 14:3	महान आश्चर्यकर्म	प्रभु का संदेश साबित किया गया

और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्रआत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा – इब्रनियों 2:4

''आशा किया हुआ विश्वास'' पैदा करता है – ''अविश्वास'' मना करता है

''क्योंकि उन बातों को छोड़ मुझे किसी और बात के विषय में कहने का हियाव नहीं जो मसीह ने अन्यजातियों की अधिनता के लिए वचन और कर्म ओर चिन्हों और अद्‌भुत कामों की सामर्थ से और पवित्रआत्मा की सामर्थ से मेरे ही द्वारा किये, यहां तक कि मैंने यरूशलेम से लकर चारों ओर इल्लुरिकुम तक मसीह के सुसमाचार को पूरा पूरा प्रचार किया''– रोमियों 15:18–19

और इस तरह, एक फैलने वाली गवाही प्रराम्भिक कलिसीया में बड़े साहस की धोषणा और शक्तिशाली प्रदर्शन के द्वारा आगे बढ़ी। परमेश्वर की उपस्थिति अन्यजाति संसार में प्रगट की गई।

3. नई जीवन शैली का तीसरा तत्व भण्डारीपन के रूप में जान जाता है। **उन्होंने आर्थिक क्रांति का अनुभव किया**

- यह एक नए तरह का अर्थशास्त्र उनके बीच में था... न तो पूंजीवाद न हीं साम्यवाद परन्तु परमेश्वर का अर्थशास्त्र

  प्रेरित 4:32 *कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।*
  प्रेरित 4:34 *और उनमें कोई दरिद्र न था।*
  प्रेरित 2:44–45 *''और वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं सांझे की थी, और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे।''*

- ये एकदम पिन्तेकुस्ते के दिन के बाद हुआ था। वहां पर बहुत सारे तीर्थयात्री तीर्थ के लिए आए हुए थे, परन्तु वे अब प्रेरितों से शिक्षा पाने के लिए रूक गए। उनका पैसा खत्म हो रहा था, इसलिए जिन लोगों के पास पैसा था या जिनके पास वस्तुएं थी, वे इन्हें बेचने लगें, और इससे प्राप्त धन को चेलों को देने लगे ताकि हरेक की जरूरतें पुरी हो सकें। उन्होंने हरेक वस्तु जो परमेश्वर ने उन्हें दी थी, का इस्तेमाल किया ताकि एक दूसरे की देखभाल की जा सके और वे आशिष पांए ।
- निजी मल्कियत कानून है, और हमें सभी को इक्ट्ठा रहने की जरूरत नहीं या अपने धन को इक्ट्ठा रखने की जरूरत नहीं, परन्तु कलीसिया उन लोंगों के द्वारा शुरू हुई जिन्होंने दूसरों की जरूरत में मदद की।
- परमेश्वर चाहता है कि, हम काम करें और सम्पन्न हों। वह चाहता हैं कि हम अपने हाथों से काम करें ताकि हम दूसरों को दे सकें। वह नहीं चाहता कि हम लेते चले जांए और भौतिकवादी बन जांए।
- कुछ कलीसीयाओं के लोग परमेश्वर की आशिष को भौतिक वस्तुओं के रूप में देखते हैं; वह उन चीजों से हमारी सफलता को नापते हैं जो हमने इक्ट्ठी की हों। यह झुठी सम्पन्नता की शिक्षा है जो दी जा रही है, जो कलीसिया को प्रभावित कर रहीं है। ''यदि तुम्हारे पास विश्वास है तो तुम धनी बन सकते हो।'' यह परमेश्वर की ओर से नहीं है।
- इसकी तुलना में, नया नियम एक ऐसी जीवन शैली को दिखलाता है जो परमेश्वर का राज्य दूसरों में बांटने वाले एक समाज को पैदा करता है। यीशु ही सबका प्रभु है जो उनके पास है। इसलिए वे सब चीजों से बढ़कर एक दुसरे की देखभाल और प्रेम करने लगे।
- पवित्रआत्मा चाहता है कि आप ऐसे जीवन को जीऐं कि आपके पास जो कुछ हो वह आप परमेश्वर के लिए इस्तेमाल करें और जैसे परमेश्वर निर्देश देता है उसे बांट दें।
- वे लोग जिन्होंने पहली कलीसिया के विश्वासीयों को देखा और बातचीत की, वे जानते थे कि, उनके साथ कुछ अद्भुत बात हो रही है। यीशु के चेलों ने एक दुसरे के प्रति ऐसा प्रेम दिखाया कि उन्होंने यदि किसी को जरूरत थी, तो अपना आखिरी रूपया भी दे दिया।

3. **भण्डारीपन :** **उन्होंने आर्थिक कांति का अनुभव किया**

प्रेरित 4:32 *कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझें का था।*

प्रेरित 4:34 *और उनमें कोई दरिद्र न था।*

एक नए प्रकार की अर्थव्यवस्था!

और वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं, और वे अपनी अपनी सम्पति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे — प्रेरित 2:44—45

ये संसार ''पकड़ने वाला'' बनाता है

मसीह का राज्य ''बांटने वाला'' समाज बनाता है

बहुत ही शक्तिशाली गवाही दी गई है जब लोग एक दुसरे के प्रति चिन्ता और देखभाल करते थे, और कोई अपनी चीज़ नहीं रखता था, परमेश्वर का राज्य उनकी प्रथम आर्थिक प्राथमिकता बन गई। वे एक दुसरे की देखभाल करते थे, भले ही कोई चीज़ न बचे — ''देखिए वे कैसे एक दुसरे से प्रेम करते थे!'' गैर मसीह चिल्लाऐ।

4. **बनावट :** **उन्होंने एक समर्पित समाज की स्थापना की**

उनकी परमेश्वर के प्रति भूख और एक दूसरे की संगति उन्हें ले गई।

— **उत्सुक अध्ययन**

वे ''भूखे झुण्ड थे!''

और वे प्रेरितों की शिक्षा पर बने रहे — प्रेरितों 2:42 (5:42 भी देखिए)

— **निरन्तर आराधना**

''प्रतिदिन''— क्या गलत छप गया???

तो एक चित होकर प्रतिदिन मंदिर मे मिला करते थे — प्रेरित 2:46

— **प्रेम के घनिष्ठ समय**

प्रेम के समय की सूचना देना
घर धर रोटी तोड़ते थे — प्रेरित 2:46

4. चौथे तत्व को हम बनावट या ढांचा कहते हैं....**<u>उन्होंने एक समर्पित समाज की स्थापना की</u>**

- उन्होनें इस बात को जान लिया कि परमेश्वर ने उनको इक्ट्ठा रखा है, और वे उनके इक्ट्ठेपन के बीच में अपने आपको प्रकाशित करेगा, न कि उनके व्यक्तिगता में। उन्हे एक दूसरे की जरूरत पड़ेगी।

- परमेश्वर के लिए भूख उन्हें निम्न बातो की ओर ले गई :

  - **<u>उत्सुक अध्ययन</u>** (वह परमेश्वर के ज्ञान के लिए बहुत ज्यादा भूखे हो गए थे)

  - **<u>निरन्तर आराधना</u>** (प्रतिदिन!.. यह गलत नहीं छपा है)

  - **<u>प्रेम के घनिष्ठ समय</u>** — प्रेम भोज (यीशु के लिए प्रेम और एक दूसरे के लिए प्रेम)। उन्होंने एक दुसरे के लिए प्रार्थना की, एक दूसरे को क्षमा किया, एक दूसरे को उत्साहित किया और नियमित रूप से और अकसर प्रभु भोज को इक्ट्ठे मनाया।

3. **भण्डारीपन :** **उन्होंने आर्थिक कांति का अनुभव किया**

प्रेरित 4:32 *कोई भी अपनी सम्पति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।*

प्रेरित 4:34 *और उनमें कोई दरिद्र न था।*

एक नए प्रकार की अर्थव्यवस्था!

और वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं, और वे अपनी अपनी सम्पति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे — प्रेरित 2:44—45

ये संसार ''पकड़ने वाला'' बनाता है

मसीह का राज्य ''बांटने वाला'' समाज बनाता है

बहुत ही शक्तिशाली गवाही दी गई है जब लोग एक दुसरे के प्रति चिन्ता और देखभाल करते थे, और कोई अपनी चीज़ नहीं रखता था, परमेश्वर का राज्य उनकी प्रथम आर्थिक प्राथमिकता बन गई। वे एक दुसरे की देखभाल करते थे, भले ही कोई चीज़ न बचे — ''देखिए वे कैसे एक दुसरे से प्रेम करते थे!'' गैर मसीह चिल्लाऐ।

4. **बनावट :** **उन्होंने एक समर्पित समाज की स्थापना की**

उनकी परमेश्वर के प्रति भूख और एक दूसरे की संगति उन्हें ले गई।

— **उत्सुक अध्ययन**

वे ''भूखे झुण्ड थे!''

और वे प्रेरितों की शिक्षा पर बने रहे — प्रेरितों 2:42 (5:42 भी देखिए)

— **निरन्तर आराधना**

''प्रतिदिन''— क्या गलत छप गया???

तो एक चित होकर प्रतिदिन मंदिर मे मिला करते थे — प्रेरित 2:46

— **प्रेम के घनिष्ठ समय**

प्रेम के समय की सूचना देना
घर धर रोटी तोड़ते थे — प्रेरित 2:46

- **<u>मदद करने वाली संगति</u>** — कलीसिया के आरम्भिक दिनों में मसीह विश्वासी एक छोटा से समूह था। उन्हें पृथ्वी का कुड़ा कर्कट के रूप में देखा जाता था। उन्हें एक दूसरे की कितनी जरूरत थी! उनके साथ भेदभाव किया जाता था और उन्हें लगातार सताया जाता था। इसलिए उन्होंने एक दुसरे की देखभाल की, एक दूसरे के साथ भोजन बांटा, एक दूसरे के साथ अपने दुखों को बांटा, एक दूसरे के लिए प्रार्थना की, इक्ट्ठे प्रार्थना की और प्रभु की ताज़गी भरी उपस्थिति का अनुभव किया। उनका पवित्रआत्मा के साथ सम्बन्ध सहायक, विस्फोटक, सामर्थशाली था। और वे इस पर अगले दिन ही चले जाने के लिए तैयार थे। संसार उनको नीचे नहीं गिरा सका।

    - जब इस तरह की संगति संसार के बीच में चलती चली जाती है तो ये **<u>प्रमाणित मसीहत</u>** को पैदा करती है। पवित्रआत्मा के बपतिस्में में ''प्रमाणिक मसीहत''— सामर्थशाली, वास्तविक, अवश्यक, प्रेम भरी, समर्पित मसीहत को पैदा करने की प्रवृति है।
    - लैरी टोमज़ैक प्रमाणिक मसीहत को इस तरह से परिभाषित करते है ''यीशु की प्रिय प्रभुता के आधीन आकर और अपरिपक्व लोगों के बीच शामिल होकर जो नये तरीके से जीना सीखना हैं''।
    - पवित्रआत्मा उस स्थान पर जहां आप रह रहें हैं इसी तरह की एक समर्पित संगति की स्थापना करना चाहता है। और जब वह ऐसा करता है तब लोग देखेंगे कि यीशु मसीह का ''प्रमाणिक'' सुसमाचार वास्तव में कैसा है और तब कई लोग इस संगति के एक हिस्से बन जाना चाहेगें।

संक्रामक गवाही के तीन आधारमयी परिणाम थे।

अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका के इस... ''मसीह ने हमें बताया कि हम ...'' के पैरे का पढ़ें।

गवाही ने एक **<u>विस्मित कर देने वाला भय</u>** को पैदा किया

- जब परमेश्वर चलायमान होता है तो परिणाम ''विस्मित'' कर देने वाला भय पैदा होता है। लोग कह रहें हैं कि, ''क्या आपने सुना है?'', ''क्या आप विश्वास कर सकते है?'', ''क्या यह वास्तविक है?'' ... यह विस्मित कर देने वाला है!

- यह परमेश्वर की उपस्थिति में इस तरह का विस्मय था जो आपको अशुद्ध विचार नहीं सोचने देगा या हमारे महान परमेश्वर के खिलाफ ऐसे काम नहीं करने देगा जो उसे अप्रसन्न करते हैं।

_ **मदद करने वाली संगति** ....

वे कैसे एक दुसरे की आवश्यकता थे!

''...आनन्द और मन की सीघाई से भोजन किया करते थे!. . . और उन पर बड़ी शांति थी'' – प्रेरित 2:46 और 4:33

जब ऐसी संगति संसार के मध्य चलती है तो ये उम्पादन करती है : प्रमाणित मसीहत

''प्रमाणित मसीहत''

''यीशु की प्रिय प्रभुता के आधीन आकर और अपरिपक्व लोगों के बीच शामिल होकर जो नये तरीके से जीना सीखना हैं''। लैरी टोमज़ैक

संक्रामक बिमारी की तरह लगने वाली गवाही के तीन आधारभूत परिणाम

मसीह ने हमें बताया कि हम उसके गवाह हें। प्रारम्भिक कलिसिया आग की नाईं जली और शीध्र फैली, क्योंकि उन लोगों के अन्दर यह आग थी। उन्होंने जीवित मसीह को पाया, और उसके लिये उत्साहित थे, वे खामोश नहीं रह सके, उन्होने गवाही दी, उन्होंने जो किया, मसीह के कारण लोगों ने उन में बदलाव देखा, अच्छाई के लिए बदलाव और लोग इस विश्वास और इस नये जीवन को चाहते थे।

इन प्रारम्भिक मसीहीयों ने किस तरीके सीखा कि उनका विश्वास दूसरों तक भी फैले। इसके लिए वे मूर्तिपूजक संसार मे मिल गए, प्रतिदिन के जीवन से मिले, इसके लिए उन्होंने अपने प्राण भी न्यौछावर कर दिये। यह सब कुछ उनके चमकते हुए विश्वास के साथ था। वे पृथ्वी के दूसरे लोगेां से बिल्कुल भिन्न थे। आप अधमरी कलिसिया के लोगों को जोशिले गवाह नहीं बना सकते और आप उन लोंगों को जिन्होंने ख्रीष्ट को जानना प्रारम्भ कर दिया है, जो उसके लिए जीते और उसके विषय बात करते है उन को नहीं रोक सकते । इस प्रकार महान संक्रामक (छूत) बढ़ा और फैल गया। (डा० हॉवर्ड कीले, ''ग्रुप्स देट वर्क्स'', जोन्डरवैन 1997)

1 **विस्मित कर देने वाला भय** ....

तब उन पर बड़ा भय छा गया और बहुत से अद्भुत और आश्चर्यकर्म प्रेरितों के द्वारा किए गए – प्रेरित 2:43 (प्रेरितों 5:12–13 भी देखिए)

संक्रामक गवाही का दूसरा परिणाम **<u>शहर के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े</u>**

- विश्वासी आनन्द को प्रदर्शित कर रहे थे। यह एक शांति और भलाई का भाव था। यह उनके आन्तिरिक जीवनो से बह और उडेंल रहा था। इसने इस बात का प्रमाण दिया कि, जीवन सच में धनी और भरपूर हो सकता है। आप उन लोंगो के प्रति आकर्षित होते जाते हैं, जो आनन्दित होते हैं।

  ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो समीह में सदा हमको जय के उत्सव मे लिए फिरता है और अपने ज्ञान का सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है'' — 2कुरिन्थियों 14:15

  लीविंग बाइबल के अनुवाद के अनुसार, ''... मसीह की एक मीठी सुगन्धदायक खूशबु हमारे आन्तिरिक जीवन मे से''

- एक सामाजिक आश्चर्यकर्म भी उनमें जगह लेने लगा। संसार ने इससे पहले ऐसी किसी भी बात को होते हुए नहीं देखा था : हर जाति और पृष्ठभूमि के लोग — प्रेम भरी, विश्वासपुर्ण, देखभाल करने वाली, और एक दूसरे से समान बर्ताव करने वाले इक्ट्ठे थे। इसलिए लोगों के बीच में उनकी अच्छी गवाही थी।

संक्रामक गवाही का तीसरा परिणाम **<u>प्रतिदिन लोग उद्धार प्राप्त करते जाते थे</u>**

- यह संक्रामक थी।

- उनके गुणों की समीक्षा करें : निर्भिकता से घोषणा करना, परमेश्वर की सामर्थ का प्रदर्शन, एक आर्थिक क्रान्ति, और मदद करने वाली संगति । जब ये बाते अथात् एक बनावट इक्ट्ठी होती हैं तब यह एक सामर्थशाली गवाही पैदा करती है।

- यह ''चेचक'' की बीमारी के समान है — संक्रामक है! यह पहुचाई गई है, आप इसे नहीं रोक सकते हैं।

- क्या आप जानते हैं कि यीशु मसीह की कलीसिया कैसे बढ़ती है? जब लोग संक्रमित हो जाते है!

प्रभु का भय निर्माण करता है

वह सबसे उत्तम और अच्छे को हममें से ले आता है

2. **शहर के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े**

और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था – प्रेरित 2:47

उनकी आनन्दमयी गवाही लोगों को विवश कर रही थी
''परमेश्वर की मुस्कुराहट उनके अन्दर गहराई से थी''

उन्होंने '' सामाजिक आश्चर्यकर्म'' बनाया

3. **प्रतिदिन लोग उद्धार प्राप्त करते जाते थे।**

और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था–प्रेरित 2:47

और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रीयां प्रभु की कलिसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे – प्रेरित 5:14

और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम मे चेलों की गिनती बहुत बढ़ गई और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के आधीन हो गया – प्रेरित 6:7

वे ''संक्रमित'' थे!

परमेश्वर के लोग इस संसार में उसके जीवन को जीने के लिए भूखे, जरूरतमन्द लोगों को खोजने वाले, हमेशा ऐसा परिणाम पैदा करेंगें!

हां, परमेश्वर की योजना है कि, संसार को सुसमाचार सुनाया जाए। जब सही तरीके से की जाए तो यह साधारण, शक्तिशाली और प्रभावित योजना है।

परमेश्वर की योजना : हम है

परमेश्वर की एक योजना है

- मैं आपको बता नहीं सकता कि, हमारे लिए यह कितना महत्वपूर्ण है कि, हम परमेश्वर की संसार के प्रति सुसमाचार प्रचार की योजना को समझें।

  ० यह बिलीग्राहम या किसी संसार में प्रसिद्ध प्रचारक को ऊंचा उठाना नहीं है।

  ० यह मात्र केवल पास्टरों और मिश्नरीयों के लिए ही नहीं है।

- पर परमेश्वर की योजना **हमारे लिए**!

  ० हमें उसकी पवित्रआत्मा से भरना है।

  ० एक परिवार मे हमें निर्मित करना है — पृथ्वी पर परमेश्वर का एक समाज।

  ० हमें संक्रामक बनाकर समाज में छोड़ना है।

- इस तरीके से परमेश्वर का राज्य बढ़ता है।

- इसीलिए वह हमें पवित्रआत्मा की आलौकिक सामर्थ में लेकर आया है।

प्रभु का भय निर्माण करता है

वह सबसे उत्तम और अच्छे को हममें से ले आता है

2. **शहर के लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़े**

और परमेश्वर की स्तुति करते थे और सब लोग उनसे प्रसन्न थे और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था – प्रेरित 2:47

उनकी आनन्दमयी गवाही लोगों को विवश कर रही थी
''परमेश्वर की मुस्कुराहट उनके अन्दर गहराई से थी''

उन्होंने '' सामाजिक आश्चर्यकर्म'' बनाया

3. **प्रतिदिन लोग उद्धार प्राप्त करते जाते थे।**

और जो उद्धार पाते थे उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था–प्रेरित 2:47

और विश्वास करने वाले बहुतेरे पुरूष और स्त्रीयां प्रभु की कलिसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे – प्रेरित 5:14

और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम मे चेलों की गिनती बहुत बढ़ गई और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के आधीन हो गया – प्रेरित 6:7

वे ''संक्रमित'' थे!

परमेश्वर के लोग इस संसार में उसके जीवन को जीने के लिए भूखे, जरूरतमन्द लोगों को खोजने वाले, हमेशा ऐसा परिणाम पैदा करेंगें!

हां, परमेश्वर की योजना है कि, संसार को सुसमाचार सुनाया जाए। जब सही तरीके से की जाए तो यह साधारण, शक्तिशाली और प्रभावित योजना है।

परमेश्वर की योजना : हम है

1. **अपनी गवाही का पत्र लिखें।** प्रभु आपके हृदय में किसी विशेष व्यक्ति के लिये डालें जिसको आप यह पत्र भेजेगें। यदि ऐसा है, तो पत्र की एक प्रति बनांए और प्रति को अगले सप्ताह के प्रश्न पत्र के साथ संलग्न करें।

   अपने पत्र में इन विषयों पर चर्चा करें :

   – आपकी वह घटना जिसमें यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता ग्रहण करके अपने आप को समर्पित किया हो।

   – ''नये जीवन'' का प्रमाण, जो आपने प्रतिदिन के अनुभव में प्रगट हो रहा है।

   – आपके अन्दर मसीह के साथ लगातर चलने की लालसा।

2. एक संतुलित गवाही को प्रभावशाली होने के लिए हमेशा परमेश्वर की सामर्थ के चिन्ह के साथ प्रदर्शित होना चाहिए। आप नीचे दिए गए पदों में इस सत्य को कैसे प्रमाणित करेंगे।

   – मरकुस 16:14–20

   – प्रेरित 9:32–42

   – प्रेरित 13:6–12

   – प्रेरित 8:4–8

3. आज भौतिक वस्तुओं के प्रति मसीह अपने अनुयायीयों से कैसा व्यवहार चाहता है?

4. आप जिस कलीसिया के साथ आज आराधना करते हैं उसमें कौन सी चीज़ संक्रामक रोग की तरह है? किस तरीके से यह और भी अधिक संकामक बन सकती है।

पैसे के प्रति नया व्यवहार

(''**नया जीवन, नई जीवन शैली**'' से लिये गये अंश, द्वारा माइकल ग्रीन)

पैसा बहुत से लोगों के लिए ईश्वर है। यह माना गया है जितना धनी हम हो सकते हैं हो जांए, और जितना अधिक हमारे पास पैसा होगा उतना ही हम प्रसन्न होंगे। 'एक जीवन का विकसित स्तर' विभिन्न राजनैतिक पार्टीयों का मुख्य उद्धेश्य है। पैसे के अत्यधिक संवेदनशील क्षेत्र के प्रति एक विश्वासी होने के नाते आप किस तरह से भिन्न ठहरेंगे?

यीशु जिसके पीछे हम चलते हैं, वह पैसे की प्राप्ति के प्रति अधिक रूची नहीं रखता था। वह बहुत गरीब दिखता था। उसे जब कर देने के लिए प्रश्न पूछा गया तो उसे एक सिक्का उधार लेना पड़ा और जब कर देने की बात आई, तो उसे मछली के मुंह में पाकर प्रसन्न हुआ। वह अपनी आवश्यकताओं के लिए अपने स्वर्गिय पिता पर भरोसा करने के लिए तैयार था। इसका अर्थ यह नहीं कि, वह अपने पैसों के लिए एक बढ़ई की तरह काम करने के लिए तैयार नहीं था, और कोई शक नहीं, कि वह जीने के लिए अपने मित्रों के साथ मछली पकड़ने गया। नासरत के यीशु की शिक्षा में पैसे के विरूध कोई बात नहीं थी, पर उसकी दासता करना नहीं था। निश्चत होने के लिए उसने एक जवान अधिकारी को सलाह दी कि जाकर अपने पैसे से छुटकारा ले ले, पर ये उसने हर एक से नहीं कहा। यह स्पष्ट है कि, पैसा उस व्यक्ति और शिष्यता के बीच में खड़ा हो रहा था। परन्तु उसने यीशु को अपने बटुए को छुने नहीं दिया, और जब तक वह उसे छुने की अनुमति नहीं देता, यीशु उस धनी नौजवान अधिकारी के लिए कुछ नहीं कर सकता था। *''कोई दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता''* जैसे उसने दूसरे अवसर पर कहा, *''तुम पैसा और परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकते''* (मती 6:24)।

नहीं! पैसे में कोई गलती नहीं है, परन्तु एक बड़ी बात जो गलत है, वह यह हैं : पैसे का प्रेम। इस गीत को गलत तरीके से लिया गया है जब इसने ये कहा, ''पैसा सब बुराई की जड़ है।'' इस वाक्य को नए नियम में से केवल आधा ही लिया गया है, जहां पर यह ऐसे लिखा है, *''पैसे का लालच सब बुराई की जड़ है''* (1तीमुथियस 6:10) एक जड़, जड चिन्ह है, पैसा अकेला नहीं है। और पैसे का लालच, पैसा स्वंय नहीं। पर सोचिए कि ये बुराई की जड़ क्या है। लालच, शोषण, बेईमानी, चोरी, घोखेबाजी, धनलोलुपता और अकसर इसके लिए कत्ल करना भी। ये सब पैसे के लालच से उपजता है। और इसमें एक जिज्ञासा है, इसके बारे में दो तरह के व्यंग्य हैं। पहला कि पैसा संतुष्ट नहीं करता। रामियों ने लम्बी उम्र, और पैसे को, समुद्र के पानी के रूप में पहचाना, जितना आप इसे पीयेगें उतना ही अधिक प्यासे होते चले जांऐगे। और दूसरा पैसा अधिक देर साथ नहीं रहता। यीशु ने कीड़ा और काई के विषय में बताया जो पृथ्वी पर इक्ट्ठा करने वालों के धन को बिगाड़ते हैं.. आज आयकर, महंगाई और शेयर बाज़ार की कीमतों ने, काई और कीड़े की जगह ले ली है! भले ही हमारा भाग्य इन सब में हमारा साथ दे तो भी भाग्य पैसे में हमारा साथ नहीं देगा। इसका जीवन थोड़े दिन का है। मैं याद करता हूं एक स्त्री के विषय, जिसने एक व्यक्ति की देखभाल की, जिसके घर के साधारण प्याले भी चांदी के थे। उसने पाया कि जब वह मर रहा था तो उसकी दयनीय स्थिति औरों से अधिक अच्छी नहीं थी। हमारे धन के विषय, ये सत्य है कि ये सब हम यहीं छोड़ जाऐंगे।

तब, पैसे के प्रति मसीह के अनुयायीयों का दायित्वपूर्ण व्यवहार क्या हो?

पहला, हम पैसे को अपना लक्ष्य नहीं बनायेंगे। हम उस धनी मूर्ख को स्मरण करते हैं जिसके खत्ते इतने भरे हुए थे कि वह सब कुछ अन्दर नहीं रख सकता था, *''मैं जानता हूं अब क्या करूंगा'' उसने कहा,''मैं अपनी बखारियों को तोड़ डालूंगा और बड़े–2 बनाऊंगा। तब काफी जगह होगी! तब मैं आराम से बैठकर स्वंय से कहूंगा,''मित्र तेरे पास काफी धन सम्पति है, अब आराम से रह, स्त्री, दाखमधु और संगीत तेरे लिए पर परमेश्वर ने उससे कहा, ''हे मूर्ख! यदि आज रात तुझसे तेरा प्राण ले लिया जाए तो ये सब किसका होगा? यीशु ने ये कहते हुए समाप्त किया कि ''हां हर एक आदमी मुर्ख है जो इस पृथ्वी पर धनी हो जाता पर स्वर्ग में नहीं''* (लूका 12:16–21)

मूर्ख न बनें! ये चिन्ता का विषय नहीं कि आप काफी पैसा बना लेते हैं या एक दूसरी कार प्राप्त कर लेते है। इसका कोई अर्थ नहीं है कि, श्रीमति जोन्स के पास एक फ्रिज है और आपके पास नहीं है, और कृप्या श्रीमान बिल की जीप से ईर्ष्या न करें यह तो केवल प्रतिष्ठा का एक चिन्ह मात्र है। निश्चय ही आपको अपने अहम् को संतुष्ट करने के लिए उन सब चीज़ों की जरूरत नहीं है। आप अपने सभी दिनों में गरीब हो सकते हैं पर आप तब भी **धनी** हैं जब आप एक राज्य के वारिस हैं!

दूसरा, हम पैसे पर भरोसा नहीं करेंगे। सम्पत्ति में सबसे बड़ा कपटपूर्ण खतरा यह है कि, यह व्यक्ति को ढीठ बना देता है। लोग निर्भरता और परमेश्वर पर आवश्यकताओं के लिए निर्भर नहीं रहते। उनके पास बैंक में इतना पैसा होता है कि, वे महसुस करते हैं कि, उन्हें किसी पर भरोसा करने की जरूरत नहीं है। और आपको पैसे पर भरोसा करने के लिए धनी होने की आवश्यकता नहीं। ऐसा ही बड़ा खतरा गरीब के लिए भी है। वे परीक्षा में पड़ कर ये महसुस करते हैं कि, यदि उनके पास पैसा होता तो सब ठीक हो जाता, और उनको सुरक्षा मिलती जिसकी उन्हे हमेशा कमी थी। धनी और गरीब दोनों ही को याद रखने की जरूरत है कि, एक विश्वासी के पास केवल एक ही सुरक्षा है : परमेश्वर। गरीबी में या धन में, मैं उसका हूं और वह मेरा है, ये काफी है। *''ऐसी इच्छा मत करिये कि अधिक पैसा होता''* अनजान लेखक ने इब्रनियों के मसीहीयों को लिखा है, *''जो कुछ तुम्हारे पास है उसी में संतुष्ट रहो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, 'कि मैं कभी न तुमको छोडूगां न भूल जाऊंगा'''* (इब्रनियों 13:5)। मेरा एक मसीही मित्र, जो स्वंय बहुत गरीब था, की ताला लगी हुई कार से कुछ पसंदीदा चीज़ें चोरी की गई, ''कोई बात नहीं'' उसने लिखा, ''वे मेरी चीज़े ले जा सकते हैं पर परमेश्वर की स्तुति हो कि वे मुझसे यीशु को नहीं ले जा सकते''। और उसने वास्तव में यह कहा! मैं विश्वास करता हूं कि यदि विश्वासी अपनी सम्पति से कम लगाव रखें और परमेश्वर पर अपने रूपये पैसे से अधिक भरोसा करें तो समाज मे आश्चर्यजनक प्रभाव प्राप्त होगें। ये ऐसे लोगों के व्यवहार के प्रति तुलनात्मक रूप से भिन्न दृष्टिकोण को रखेगा जो उद्योगों मे काम करते हैं, और जो लोग सड़कों पर होते हैं।

मुझे अच्छी तरह याद है कि कुछ वर्ष पहले एक दम्पति यीशु के विश्वास में आ गया। आदमी की नौकरी चली गई थी, पत्नी को स्थानिय अधिकरियों से खेल की पाठशाला चलाने के लिए अनुमति मिलना कठिन था। उनकी एक पुत्री थी जिसके लिए कहा गया था कि वह मर जाएगी। इसके साथ ही उन्हे अपना घर भी लेना था। उनके दिमाग की शांति, परमेश्वर पर भरोसा ने उन सब पर जो उन्हें जानते थे, बहुत प्रभाव डाला। उन्होंने परमेश्वर पर अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए अन्धकार में भी परमेश्वर पर भरोसा रखा और वे निराश नहीं हुए। इसे देखना अद्भुत था। उनकी पुत्री ठीक हो गई, नौकरी मिल गई और वे आनन्द से एक मसीही कलिसीया चलाने के लिए, उसकी मदद में लग गए। उनके हालात बदल गए। प्रतिज्ञा की सच्चाई प्रमाणित हुई, *''मेरा परमेश्वर तुम्हारी हर एक घटी को पूरा करेगा''* (फिलिप्पीयों 4:19)।

तीसरा, हम देना चाहेंगे : ये सभी आंतरिक क्राति का भाग है, जब आत्मा हमारे जीवन में प्रवेश करता है। यीशु ने जक्कई के घर पहुच कर पूछा, जो कठोर चुंगी लेने वाला, जिसका प्रभाव बिजली की तरह था। जक्कई यीशु की उदारता से इतना प्रभावित था कि उसने कहा, *''महाशय! मैं अब से अपना आधा धन गरीबों को दे देता हूं और यदि किसी से अधिक ले लिया तो उसका चार गुणा लौटा दूंगा''*। यीशु का वर्णन निर्देश के रूप में था, *''यह ऐसा दिखता है कि आज इस घर में उद्धार आया है''* (लुका 19:1—9)। एक व्यक्ति के जीवन परिवर्तन का पहलू यह भी है कि सम्पत्ति के प्रति उसका व्यवहार बदल जाता हैं।

मैं सोचता हूं, कि कुछ ऐसा ही पौलुस के दिमाग में इफिसीयों के नए विश्वासीयों के लिए कुछ प्रकाशित शब्द थे, *''यदि तुममें से कोई चोरी करता है तो उसे बन्द कर दें और उन हाथों को ईमानदारी के काम में लगाएं, जिससे जिनको जरूरत हैं, दे सकें''* (इफिसीयों 4:28)। ऐसा व्यक्ति जिसका दर्शन शास्त्र अभी तक ''लेना'' है अब ''देना'' आरम्भ करता है। व्यक्ति जिसने दूसरो का चुराया क्योंकि वह काम करने में आलसी था, अब काम करता है कि दूसरों को दे सके। इसके नए व्यवहार के प्रति कैसा है?

चौथा, हम अपने को पैसा इस्तेमाल करने में परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। यहां पर पौलुस इस विषय को लेकर एक समय में अवश्य ही बहुत धनी व्यक्ति रहा होगा या फिर वह रोम का नागरिक नहीं हो सकता था।

''इस संसार के घनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायात से देता है, और भलाई के काम करें और भले कामों में धनी बनें और उदार और सहायता देने में तत्पर रहें और आगे के लिए एक अच्छी नींव डाल रखें कि सत्य जीवन को वश में कर लें''(1तीमुथी 6:17—19)

चाहे मेरे पास अधिक पैसा हो या कम सम्पत्ति, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। एक विश्वासी होने के नाते मुझे अपनी आय का हिस्सा परमेश्वर को देना है; यहूदी दस प्रतिशत दिया करते थे, मैं नही देख सकता कि क्यों विश्वासी कम दें (भले ही वह पेंशन लेने वाला हो या फिर वजीफा प्राप्त विद्यार्थी!)। देना एक कर्तव्य ही नहीं है, इसकी बजाए यह कि हम अपना कितना व्यक्तिगत प्रेम प्रभु के प्रति प्रगट करते हैं। पौलुस ने मकिदूनिया के विश्वासीयों को लिखा *''कि कलेश की बड़ी परिक्षा में उनके बड़े आनन्द और भारी कंगालपन के बढ़ जाने से उनकी उदारता बहुत बढ़ गई और उसके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ से भी बाहर मन से दिया''* (2कुरिथि. 8:2—3)। स्वाभाविक रूप से ये काफी है, *''तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ''* (पद 9)। ये मसीह का व्यवहार था। यह आश्चर्य की बात नहीं कि यही उसके अनुयायीयों पर भी लागू किया जाए। ये अभी भी काम करता है।

यीशु गरीब और जरूरतमन्दों के लिए विशेष रूप से चिंतित था। उसने अपने चेलों को बताया कि जब वे बीमारों और गरीबों की, तिरस्कृत और बन्दियों की आवश्यकता पूरी कर रहे थे तो वे एक बड़ी सेवकाई में थे (मती :35—40)। चेलों ने इसे अपने हृदय में लिया। यरूशलेम में पहले यहूदी विश्वासी यीशु को मसीहा के रूप में प्रचार करने में अधिक व्यस्त नहीं थे, कि वे विधवाओं और अनाथों की सुधि लेने के लिए कुछ योजना न बना सके। अन्ताकिया में पहले अन्यजाति से आए विश्वासी अपने मिशनरी कार्य में इतने अधिक व्यस्त नहीं थे कि आकाल के लिए पैसा जमा न कर सकें, जो उनके दुःखित भाईयों के लिए था जो यरूशलेम से उनसे सैंकड़ों मील दूरी पर थे।

ये बड़ी रोमांचक और महत्वपूर्ण तथ्य है कि नए नियम के लेखकों ने कोईनोनीया शब्द को ''संगति '' और ''आर्थिक सहायता'' के लिए प्रयोग किया है! ये दोनों सम्बन्धित नहीं है! देने के बारे में एक बहुत ही अच्छा उदाहरण, कुछ समय पहले पश्चिमी अफ्रीका में पाया गया ताकि मसीही संगति क्या होती है, को दर्शाएं! नाईजीरिया और बियाफ्रा के विश्वासीयों ने मसीही प्रेम और सहायकपन को दिखाया, जो जातिगत भावनाओं और गृह युद्ध की कड़ुवाहट की हदों से दूर होकर युद्ध के अन्त में आर्थिक सहायता के लेन—देन से हुआ! उनके राष्ट्रवादी लोगों ने कहा, ''दूसरी तरफ वालों से घृणा करो और ये घृणा युद्ध करके दिखाओ''! उनकी मसीहत ने कहा, ''दूसरी तरफ वालों से प्रेम करो और देने के द्वारा अपना प्रेम दिखाओ''। उनकी मसीहत ने राष्ट्रवादिता को जीत लिया! उन्होनें प्रभु से मुफ्त मे पाया, इसलिए मुफ्त में दिया । यही यीशु करता है, क्या ऐसा नहीं है?

आईये, पैसे के विषय को यहीं छोड़ दें, हालांकि नया नियम में ये जो लिखा है, बहुत कुछ पैसे के विषय में लिखा है, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण दृष्टिकोण रखता है। ये सही मे हमारे साथ पैसों के सही उपयोग के विषय बात नहीं करते। उदाहरण के लिए, ये हमें बतातें हैं, कि दूसरे लोगों के पैसे को कोई मूल्य न दें, न कपड़ों से और न अधिक कुलीनता के वस्त्र पहने हूए या सुख विलास में भोजन करें, जब दूसरे जरूरत में हैं। ये हमें बताते हैं कि ये हमारी जिम्मेवारी यह है कि ऐसे लोगों के प्रति दयावन्त और उदार हो जिन्हें हम नौकरी पर रखते हैं, यह याद करते हुए कि हमारा भी एक स्वामी स्वर्ग में है। ये बताते है कि हमारे परिवारों की देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। याद करिए किस प्रकार यीशु ने अपनी माता को उपलब्ध करवाया, यहां तक कि जब वह क्रुस पर था? पौलुस बड़ा साफ—2 कहता है, *''यदि कोई अपने परिवार की देखभाल नहीं कर सकता वह अविश्वासी से भी बुरा है''* (1 तीमुथी. 5:8)। ये बताते हैं कि हम अपना पैसा सुसमाचार प्रचार करके समस्त संसार के लोगों के जीवनों में लगा सकते हैं। ये हमें याद दिलातें हैं कि न केवल हम अपनी आय

का एक हिस्सा परमेश्वर को देते हैं जो उसका है, पर ऐसा ही दूसरे भी करते हैं। आपकी इच्छा क्या है? क्या आप अपना पूरा पैसा परिवार के लिए छोड़ देना चाहते है? या कुछ मसीही कार्य के लिए भी छोड़ना चाहते हैं? हम अपने पैसों के उपयोग के लिए उसके प्रति उत्तरदायी हैं। ये हमें उधारी मे दिया जाता है, हम दूसरों की सम्पत्ति में एक प्रबन्धक की तरह कार्य करते हैं।

निसंदेह, मसीह के प्रति निष्ठापूर्वक मसीही कार्य करने के तरीके में एक भिन्नता होगी। इसके लिए कोई सख्त या नरम नियम नहीं हैं। मैं एक व्यक्ति के बारे में सोचता हूं जो स्टोक एक्सचेन्ज में काम करता है, फिर भी पैसे के इस्तेमाल मे पूरी तरह मसीह को समर्पित है। एक और व्यक्ति के विषय में सोचता हूं, जो यह जानता है कि उसके लिए पैसे के प्रति मसीह के लिए आज्ञाकारिता का अर्थ हैं कि कोई आय नहीं और फिलिपिन्स देश में विश्वास आधारित मिशन के लिए कार्य करना है। दोनों आदमियों में इतनी बड़ी भिन्न्ता होने पर भी दोनों के उपर एक ही क्रातिकारी सिद्धान्त काम कर रहा है : देने का सिद्धान्त, लेने का नहीं। पैसे के मामले में मसीह को प्रसन्न करने का। यही महत्वपूर्ण बात है।

☆☆☆ ☆☆☆ ☆☆☆ ☆☆☆

हमें कितना देना चाहिए? पूराने नियम में सबसे कम स्तर दसंवा अंश था जो सम्पूर्ण आय का दस प्रतिशत। नए नियम में इसे समाप्त नहीं किया गया पर वास्तव में हर एक चीज़ जो हमारे पास है उसे शामिल कर विस्तृत किया गया है। (मति 23:23)।

केवल सब्त नहीं पर हर दिन परमेश्वर का है। फिर भी हम सातों दिनों में से एक दिन विशेष ठहराते हैं कि वह ''प्रभु का दिन'' है। उसी प्रकार से दसंवा अंश को हमें देने के स्तर पर स्थापित करने की आवश्यकता है। दशंवांश हमारे परिश्रम का पहला फल होना चाहिए जो दूसरे कार्यों को करने से पहले हम देते हैं। हमारा देना योजनाबद्ध और नियमित होना चाहिए जैसा पवित्रआत्मा हमारी अगुवाई करे (2कुरिंथि. 8:3—4)। यह न तो व्यवस्था की बात है न डरने की। यह मसीह की प्रभुता में प्रेम से समर्पित करने का परिणाम है।

परमेश्वर ने एक हमेशा का नियम बनाया है, *' 'दिया करो तो तुम्हे भी दिया जाएगा लोग पूरा नाप दबा दबा कर और हिला हिला कर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो उसी नाप से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा''* (लूका 6:38)। इसलिए जब हम देते हैं तो अपने आप को महान प्रेम की गहराई में और प्राणों की चौड़ाई से देते है। तब हम देखेंगे कि परमेश्वर हमें कई गुणा आशिष लौटा रहा है। यदि हम कंजूसी से बोऐंगे तो कंजूसी से काटेंगे, यदि उदारता से बोएगे तो उदारता से फसल को कई तरीकों से काटेंगे।

दशंमांश के साथ परमेश्वर कई बार हमसे धन्यवाद के दान और प्रेम की भेंटे चाहता है जैसा आत्मा अगुवाई करें। यह प्रेम और आनन्द के त्यागपूर्ण कार्य हैं जो प्रभु की दृष्टि में बहुमूल्य है (मरकुस 14:3,9)। असल में हमने ''भेटों'' को देना आरम्भ ही नहीं किया है जब तक कि हम दशंमांश प्रभु न दे दें।

हमारे दान कहां जाने चाहिएं? धर्मशास्त्र यहां भी सपष्ट बोलता है, *''सारे दशमांश भण्डार में ले आओ के मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे, और सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलकर तुम्हारे ऊपर आशिष की वर्षा करता हूं कि नहीं''* (मलाकी 3:10)।

नोट कीजिए कि परमेश्वर केवल आशिष की प्रतिज्ञा ही नहीं देता। यहां एक तरीका है जिससे उसकी विश्वासयोग्यता को आप परख सकते हैं। वह निर्देश देता है कि यह दशमांश भण्डार गृह में जाना चाहिए। जहां आप का भी भोजन रखा हुआ है इसलिए आपका दशमांश स्थानीय कलिसीया में जाना चाहिए जहां आप आत्मिक रूप से खिलाए जाते है। उपरोक्त दशमाशं का देना मिशन और दूसरी परियोजना के लिए जाएगा। इसका कारण एक और भी है, यदि आप एक होटल में खाना खाते हैं तो दूसरे होटल के खंजांची को पैसा नहीं देते।

पृथ्वी पर जमा धन जंक से भरा हो सकता है या खो भी सकता है, स्वर्ग में रखा हुआ धन हमेशा के लिए है। जब भोजन के लिए खर्चा करते है तो आपको कुछ घण्टों के लिए फायदा हेाता है। कपड़े, आप कुछ महीनों के लिए पहनते हैं। एक कार कुछ सालों के लिए टिकेगी। पर जब आप मसीह के लिए खर्च करते हैं तो आप अनन्त लाभ के लिए काटते हैं। (यह अन्तिम भाग सम्पादकिए नोट से ''यीशु के साथ आप का अगला कदम'' से लिया गया है, द्वारा डाक्टर होंग सिट)

प्रथम

पिछले सप्ताह के प्रश्न पत्र को देखें।

अब

हरेक को उस व्यक्ति के विषय संक्षिप्त में बताने दें जो उनके जान पहचान का है जिसके बारे में वे सोचते हैं कि वह एक ''संक्रामक रोग'' लगाने वाले विश्वसीयों को प्रस्तुत करता है। उन्हे बताने दीजिए कि वे ऐसा क्यों सोचते है।

तब

इस ''संक्रामक जीवन शैली'' के विषय वार्ता करें।

''हमारी गवाही साधारण रूप से हमारे जीवन यापन और एक दूसरे को प्रेम करने का स्वाभाविक बहाव होना चाहिए।''

— इस विचारं का विशलेषण और इसकी व्याख्या करें

— हम और अधिक ''संक्रामक'' कैसे हो सकते हैं कि अपने चारों ओर दुनिया वालों पर अधिक प्रभावित हो सकें?

— समूह को उदाहरण देने दीजिए।

अन्त में

इस वर्णन के लिए आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

जब आत्मा का वरदान मानवीय आवश्यकता के बीच प्रगट किया जाता है तो लोग उठ बैठते हैं और ध्यान देने लगते हैं, कोई उदारहण दीजिए जो आपने देखा हो या जानते हों।

अगले सप्ताह के लिए

1 इस सप्ताह के प्रश्न पत्र को करने से पहले आपके समूह के लोगों से उनकी अपनी गवाही का पत्र लिखने को कहें।

उनसे चर्चा करें कि इस गवाही में और क्या शामिल करना है और किसे ये पत्र लिखना है। उन्हे इस पत्र की एक प्रति बनाकर भेजनी है और एक प्रति आपको प्रश्नों के साथ अगले सप्ताह देनी है।

2. पर्चे को पढ़िए — ''पैसे के प्रति नया व्यवहार''।